

यान्वयै श्रुत्वतप्यत् धिष्यतः AV. 2, 35, 1. प्रजा श्रुत्वतप्यमानम् 2. मा प्रु-
मनुतप्यथा: MBh. 7, 2195. Auch act.: तदा युद्धं धर्मराष्ट्रे श्रुत्वतप्यत् be-
reuen 3, 1822. राज्यनाशम् u. s. w. श्रुत्वतप्य sich grämend um 11, 182.
— caus. Jmd Schmerz bereiten, betrüben: विरक्षः क्रिमिवानुतप्येद्द
वाह्यविर्षयैर्विरपश्चित् राग्भ. 8, 88. — Vgl. श्रुत्वाप, श्रुत्वापन.

— प्रत्यनु pass. Reue empfinden: यदि द्वा वौ राज्यनुः प्रत्यनुतप्य-
से R. 2, 12, 36.

— समनु pass. dass.: मोक्षाद्यर्थं यः कृता पुनः समनुतप्यते MBh. 13,
5385.

— श्रभि 1) erwärmen, erhitzen; bescheinen AV. 19, 28, 3. यथा स्म ते
विरहूतो श्रभितसमिवान्ति 4, 1, 3. सर्वेषु सुवर्गेषु लोकेष्वभितपवेति TBr.
1, 2, 4, 1. स (प्रजापति): तपो श्रतप्यत स तपस्तप्वेमां लोकान्मृतात् पृथि-
वीमतरिदं दिवं तां लोकान्मृतपत् (nach Siv. = पर्याताचितवान् तेषो
श्रितपेयव्याप्तिं व्योतीतिं ध्यायत् AIT. Ba. 5, 32. AIT. Up. 1, 4. 3, 2. KHAÑD.
Up. 2, 23, 3, 4. 7, 11, 1. BHAG. P. 3, 6, 11. श्रम्यतप्यत mit transit. (!) Bed.
CĀNKH. Br. in Ind. St. 2, 303. श्रभितसां दार्यति शिलाम् VARĀH. Brh. S. 53,
116. श्रभितसमयोऽपि मार्दवं भग्नते RāgB. 8, 43. यत्र व्याचन स्पन्दनाभितपति
(श्रादित्य): BHAG. P. 5, 21, 9. CĀT. Br. 13, 3, 8, 6. 11, 5, 8, 2. fgg. KĀTJ. Ča.
2, 3, 26. दिवाकराभितस Suç. 1, 176, 12. KUMĀRAS. 5, 21. R̄t. 4, 14. — 2)
schmerzen: चित्रपत शिरो मास्याभिताप्सत् PĀR. GRHJ. 3, 6. — 3) durch
Gluth quälen, — mitnehmen; quälen, peinigen; pass. Schmerz empfinden, leiden: वर्णं राजन् ब्राठेरणाभितसा वथाभिना कोटरस्थेन वृत्ताः BHAG.
P. 4, 17, 10. श्रभितसः शैरः: MBh. 6, 571. sg. 5, 7216. व्यसनैरभितसस्य
नरस्य विनशिष्यतः 13, 1815. हायामपि — शोकाभ्यामभितप्यते R. 2, 62,
5. दन्तैरेव — ग्रात्सर्वमभितसमिदं सदा R. GORR. 2, 84, 20. धातुर्बधाभितसेन
व्या BHAG. P. 4, 11, 9. भावी स्वामेव ताम् — परिज्ञायाप्तपत्यत KATHĀS.
21, 72. तस्मात्किमभितप्यतं वाक्षयेरूपकृतसि MBh. 7, 6555. श्रभितस
sich grämendum (acc.): स्त्रीणाम् — रामेवाभितसानां श्रुश्वाव परिदेवनम्
R. 2, 57, 15. — caus. durch Gluth quälen, — mitnehmen: स पाण्डवान्क-
युगात्ताकः कुद्रन्भ्यतीतपत् MBh. 7, 1417. वक्षितेऽभितापिता: 14, 1742.
R̄t. 1, 13, 15. — Vgl. श्रभिताप.

— श्रव् Wärme herabstrahlen, herabscheinen: मुखेष्वावं तपति चर्तु
गोषु गौरपि AV. 12, 4, 39. — caus. von oben herab erwärmen, — be-
scheinen: श्रवावताप्य पृथिवीं पूषा दिवसंसंतप्ते। इगामास्तम् MBh. 5, 7162.
— Vgl. श्रवतसेनकुलस्थित, श्रवतापिन्.

— श्रा 1) Wärme ausstrahlen, scheinen: शं ते सूर्यं श्रातपत् AV. 8, 2, 14.
6, 12. श्रग्धिर्द्विव श्रा तपति 12, 1, 20, 3, 50. VS. 31, 20. KAU. 137. या श्रातपति
वर्षति im Sonnenschein CĀT. Br. 5, 3, 4, 13. 14, 1, 1, 33. — 2) erhitzen,
ausglühen: श्रातपत्तान्बून्दभूपतिकाङ् HARIV. 15769; vgl. u. तप् 2 am Ende.
— 3) pass. a) Schmerz empfinden, — leiden: श्रातपत्तान्बून्दपे BHAG. P.
3, 31, 13. — b) in Verbindung mit तपस् sich kasteien: श्रातपत्त — तपः
BHAG. P. 2, 9, 8. — Vgl. श्रातप् fgg.

— श्रम्य es Jmd heissmachen d. h. bedrängen: श्रम्यातपति माधान्यर्णा
कुरुषामरातपः R. V. 7, 83, 5.

— उद् 1) erwärmen, erhitzen: मैत्रस्य पाणिमुतपति P. 1, 3, 27, VÄRTT.,
Sch. महो वितप्त्यर्पकः VOP. 23, 20. ausglühen: उत्पत्ति सुवर्णं सुवर्णकारः
P. 3, 1, 88, Sch. उत्तपताघप्रभ RĀGĀ-TAR. 4, 368; vgl. u. तप् 2 am Ende.
Ist das zur Erkl. von उत्तपत् H. an. 3, 251 gebrauchte चक्षत् etwa in der

Bed. flüssig, geschmolzen zu fassen? MED. t. 97 hat st. dessen उत्तपत् med.
sich (ein Glied) wärmen P. 1, 3, 27, VÄRTT. उत्तपते पाणिम् Sch. VOP. 23,
20. intrans. P. 1, 3, 27. VOP. 23, 20. नाधिष्य उत्तपेत् LĀTJ. 3, 3, 17.
brennen P., Sch. तीव्रमुतपतानो उपमशक्यः सोऽुमातपः BHÄTT. 8, 15.
— 2) Schmerz verursachen, quälen, peinigen, Jmd zusetzen: श्रिन-
शं निवैरकरुणः करुणं कुमुमेषु रुतपति पद्मिषेवै: Cīc. 9, 67. कुडुतस RĀGĀ-
TAR. 2, 21. विमानतोत्तप 6, 277. दुःखोत्तसं वचः so v. a. von Schmerz er-
füllt 3, 183. उत्तपत् = संतपत् H. an. = परिसुत् MED. — caus. erwärmen:
यथा चोतापितं वीडं कपाले यत्र तत्र वा। प्राप्यायद्वृत्तेनुत्तमवीजत्वाव
जापते || MBh. 12, 11884. — Vgl. उत्तपत्, उत्ताप.

— उप 1) erwärmen, erhitzen: तानोषिद्वेषपत्य CĀT. Br. 2, 5, 2, 14.
क्षायामुपसर्पति । एतेना कैलडुपतपदाचातते 11, 1, 5, 2. उत्तपतोदका नम्यः
R. 2, 59, 9. — 2) Schmerz fühlen, unwohl werden: श्राद्धिताग्निशेषुपतपेत्
ÂÇV. GRHJ. 4, 1. उत्तपतास्वनुपतपतानामाल्यम् KĀTJ. Ča. 22, 3, 23. — 3) über
Jmd (gen.) kommen (von einem Unwohlsein) oder unpers. es wird Jmd
(gen.) unwohl: स किं म एतडुपतपसि यो शृमनेन न प्रेष्यामि KĀND. UP.
3, 18, 7. यदि दीक्षितस्योपतपेत् unpers. CĀT. Br. 12, 3, 5, 2. Auch mit dem
acc. der Person: तं चेदेत्तस्मिन्द्ययसि किंचिदुपतपेत् KĀND. UP. 3, 16, 2, 4.
6. — 4) pass. a) Schmerz fühlen, unwohl werden, leiden: दीक्षितशेषुप-
तपेत् KĀTJ. Ča. 25, 13, 20. व्यैरूपतप्यते Suç. 1, 21, 16. मानसेन दुःखेन
शरीरमुपतप्यते । अयःपिणेन तपेन कुमसंस्वर्मिवेदकम् (hier heiss wer-
den) || MBh. 3, 71. पस्यामेव कवय श्रात्मानमविरतं विविधवृजिनसंसारप-
रितोपतप्यतामनुसवनं स्नायतः BHAG. P. 5, 6, 18. विष्मूत्रं वाहिन्या-
मुपतप्यते 26, 22. उपातप्यत (BURN.: fut attaquée par l'incendie) 4, 28, 12.
गृह्यतिरूपतप्यते VARĀH. Brh. S. 32, 66. उपातप्यमानमलघृजिमामिः श्रस-
तीति: Cīc. 9, 65. — b) mit तपस् Kasteierung leiden: उप तप्यामहू तपः AV.
7, 61, 2, 1. — caus. 1) anzünden, verbrennen: (अग्ने) न नौ गृहाणामुपतो-
तपाति AV. 6, 32, 1. — 2) Schmerz bereiten, kasteien: स समिद्वे मृक्त्य-
मी शरीरमुपतापयन् (als Kasteierung) MBh. 3, 10708. मनुष्या यदि वा देवा:
शरीरमुपताप्य वै 13, 7563. es Jmd heiss machen, Jmd zusetzen, bedrän-
gen: विष्वचक्रोपतापितः BHAG. P. 9, 4, 35. तमापि — दण्डेनोपतापयेत् als
Erkl. von श्रोपेत् KULL. zu M. 9, 273. — Vgl. उत्तपत् fgg.

— समुप pass. Schmerz empfinden: श्र्वर्यधर्मोपदाताद्वि मनः समुपतप्यते
MBh. 2, 856.

— नि Gluth herabstrahlen: तदाङ्गिर्षोचाति नितपति वर्षिष्यति वा
इति KĀND. UP. 7, 11, 1. niederbrennen: द्विष्टो नितपेत् AV. 19, 28, 3.

— निस् (स wird य nach P. 8, 3, 102, wenn nicht von einer stets wie-
derkehrenden Handlung die Rede geht) 1) versengen: निष्टुतं रुद्वा नि-
ष्टां श्रातपति: VS. 1, 7. निष्टैकदेशा ब्रह्मो निष्टाश्च तथापरे MBh. 1,
8215. — 2) ausglühen, bähnen: यथा विरायं निष्टपेदेवमेनमयिष्विष्यपति
PĀNKAV. Br. 17, 6, 2, 17. निष्टपति सुवर्णाम् (von einer einmaligen Hand-
lung), aber निष्टपति सुवर्णं सुवर्णाकारः P., Sch. निष्टैकनकप्रभ MBh. 6,
228, 13, 833. 15, 670. R. 3, 58, 33. DAÇAK. in BENF. Chr. 198, 23. (अग्नी)
उपव्युपमरणी निष्टपेत् TBr. 4, 1, 9, 9, 2, 1, 3, 5. तं निष्टपतं तपसा धर्मम्
ausglühen so v. a. läutern, von den Schlacken befreien MBh. 7, 9458. —
3) erwärmen: यस्तु सूर्यो निष्टैं गाङ्गेयं पित्रते जलम् MBh. 13, 1796. सु-
निष्टपतपतावासिक्तं HARIV. 8440. gar braten, rösten: इदं (मांसं) मेघमिदं
स्वादु निष्टैमधिना R. 2, 97, 2. तं (कृज्ञमृगं) तु पक्वं समाजाय निष्टैं हि-